(16 पृष्ठ होते हैं)

ONLY FOR DEMO USE

98/100

केन्द्र व्यवस्थापक की मोहर.....

केन्द्र की मोहर.....

अ

(28 पृष्ठ कवर सहित)

इण्टरमीडिएट परीक्षा

परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तिका के किसी भाग में अपना नाम न लिखें।

केन्द्राध्यक्ष एवं कक्ष-निरीक्षकों को यह अधिकार होगा कि वे परिषद की परीक्षा में सम्मलित होने वाले परीक्षार्थीयों की तलाशी ले सकते हैं।

(परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तिका के पृष्ठ भाग पर दिए निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़े तथा सावधानी के साथ पालन करें)

निम्नांकित क्रमांक १ से ६ तक की पूर्ति परीक्षार्थी स्वयं करें।

इस उत्तर-पुस्तिका का प्रयोग करने से पहले परीक्षार्थी यह भी देख लें कि उस पर वही वर्ष परिछिद्रित है जिस वर्ष में वह परीक्षा दे रहा हैं।

(परीक्षार्थी सभी प्रविष्टियां शुद्ध एवं स्पष्ट रूप से स्वयं भरें)

1. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंको में) } 2151432

2. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (शब्दों में) } इक्कीस लाख इक्यावन हजार चार सौ बत्तीस

3. विषय एवं प्रश्न-पत्र तथा संकेतांक
   - विषय: संस्कृत
   - प्रश्न-पत्र: केवल
   - प्रश्न-पत्र पर अंकित संकेतांक → 303 (ZO)

4. परीक्षा का दिन: सोमवार

5. परीक्षा तिथि एवं पाली: 6/12/2021 द्वितीय

6. केन्द्र का नाम

(कक्ष-निरीक्षक भरें)

उपर्युक्त प्रविष्टियों का निरीक्षण किया।

परीक्षा-कक्ष संख्या (Exam Room No.) 04

कक्ष-निरीक्षक का पूरा नाम व स्पष्ट हस्ताक्षर Anwar Ali

दिनाँक 02/2021

परीक्षक का चाहिए कि निम्न तालिका में प्रश्न तथा उसके खण्डों का प्राप्तांक यथास्थान भरें

प्रश्न-संख्या	प्राप्तांक क	ख	ग	घ	ङ	च	योग	प्रश्न-संख्या	प्राप्तांक क	ख	ग	घ	ङ	च	योग
1	2	2	2	2	2	—	10	21							
2	4	—	—	—	—	—	4	22							
3	4	—	—	—	—	—	4	23							
4	1	1	—	—	—	—	2	24							
5	7	—	—	—	—	—	7	25							
6	5	—	—	—	—	—	5	26							
7	4						4	27							
8	1	1	—	—	—	—	2	28							
9	—	7	—	—	—	—	7	29							
10	—	7	—	—	—	—	7	30							
11	4	—	—	—	—	—	4	31							
12	1	1	1	—	—	—	3	32							
13	10	—	—	—	—	—	10	33							
14	3	—	—	—	—	—	3	34							
15	2	2	—	2	2	—	8	35							
16	2	1	—	—	—	—	3	36							
17	2	1	—	—	—	—	3	37							
18	2	1	—	—	—	—	3	38							
19	2	1	—	—	—	—	3	39							
20	1	1	—	4	—	—	6	40							
योग							98	योग							

परीक्षक का पूरा नाम एवं स्पष्ट हस्ताक्षर तथा परीक्षक संख्या Anwar Ali

Roll N. -

प्रश्नोत्तर नं० – 1

सा तु समुत्थाय ..... बहुप्रकारके प्रिय सखी।

उ० – i – उपर्युक्त गद्यांश 'चन्द्रापीड कथा' (कादम्बरी) से लिया गया है। यह बाणभट्ट जी द्वारा विरचित है। 2

उ० – ii – कादम्बरी महाश्वेतां स्नेहनिर्भरं कण्ठे जग्राह। 2

उ० – iii – रेखांकित अंश का अनुवाद – "सखी कादम्बरी! भारतवर्ष में तारापीड नाम के राजा हैं।" 2

उ० – iv – 'भारते' शब्द में सप्तमी विभक्ति है। 2

उ० – v – 'आत्मजः' का शाब्दिक अर्थ 'पुत्र' है। 2

कृ० पृ० प०

Roll N. -

प्रश्नोत्तर नं– 2

चरित्र-चित्रण

(iii) चन्द्रापीड

चन्द्रापीड महाकवि बाणप्रणीत कादम्बरी का मुख्य नायक है, इसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) सौन्दर्ययुक्त नवयुवक :—

चन्द्रापीड राजा तारापीड का सुन्दर एवं नवयुवा सुपुत्र है। जब उसमें यौवन आता है तब उसका अंग-प्रत्यंग खिल उठता है।

(2) ज्ञानी एवं प्रेमी :—

चंद्रापीड गुरुओं द्वारा प्रदत्त समस्त विद्याओं को शीघ्र ही ग्रहण कर लेता है, वह सभी विधाओं, शास्त्रों शस्त्रविद्या, घोड़े और हाथी पर सवारी, पक्षियों की भाषा में निपुण है। चंद्रापीड एक प्रेमी युवक है, वह कादम्बरी के रूप एव सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है, तथा उससे सच्चा प्रेम करने लगता है।

अत: चन्द्रापीड विद्वान् एवं सच्चा प्रेमी है।

Roll N. -

(3) सच्चा मित्र :-

चंद्रापीड एक सच्चा मित्र है, वह अपने मित्र वैशम्पायन के बिना नही रह सकता। चाहे विद्याकुल में जाना हो अथवा युद्ध या फिर दिग्विजय। वैशम्पायन और चंद्रापीड एक आत्मा और दो शरीर की तरह हैं।

(4) वीर तथा पराक्रमी :—

चंद्रापीड महान वीर एवं पराक्रमी युवक है। वह चारों दिशाओं को जीत कर सबको अपने अधीन कर लेता है।

4

(5) चन्द्रमा का अवतार एवं निष्काम प्रेमी :—

चंद्रापीड चंद्रमा का अवतार है। वह राजा तारापीड का सुपुत्र है। चंद्रापीड कादम्बरी से प्रेम करता है लेकिन वासना का स्पर्श तक नहीं है।

इस प्रकार, चंद्रापीड एक विद्वान एवं परमवीर पात्र होने के साथ-साथ प्रेमी एवं सच्चा मित्र भी है।

Roll N. -

प्रश्नोत्तर सं॰ - 3

[बाण भट्ट की गद्य शैली]

बाणभट्ट के गद्यकाव्य में चरित्र-चित्रण की अद्भुत कला दिखाई देती है। साथ ही उन्होंने प्रकृति के नाना दृश्यों एवं रूपों को हृदयंगम कराने के लिये नाना अलंकारों की सहायता ली है।

उपमा, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास आदि का प्रयोग कर पाठकों के सामने अपने वर्ण्य विषय की मंजुल अभिव्यंजना की है, उपमा का एक उदाहरण प्रस्तुत है —

"हरइव जित मन्मथः, 'सचारिणीमिवेन्द्रनीलमाणि पुत्रिकाम्', 'रक्तचरणामिव कात्यायनीम्'।"

कहा गया 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' अर्थात् गद्य कवियों की कसौटी है। इस कसौटी पर महाकवि बाण पूर्णरूपेण खरे उतरते हैं।

महाकवि बाण की भाषा-शैली एवं वर्णन की मधुरता तथा व्यापकता के कारण ही 'बाणोच्छिष्टं-जगत् सर्वम्' उक्ति के द्वारा सम्पूर्ण काव्यजगत

Roll N. - 2151432

को बाण का जूठा कह दिया गया। बाणभट्ट रससिद्ध कवि हैं ये किसी भी रस का मार्मिक प्रयोग कर रसास्वादन करने मे सिद्धहस्त हैं। 4

प्रश्नोत्तर सं० - 4

उ० - (अ) (i) कादम्बर्याः सेवकः। 1

उ० - (आ) (*) अपवादित प्रश्न / केयूरक माता का नाम वर्णित नहीं है। 1

प्रश्नोत्तर सं० - 5

सन्दर्भ :-

प्रस्तुत श्लोक महाकवि कालिदास विरचित "रघुवंश - महाकाव्यम्" के द्वितीय सर्ग से उद्धृत है। 2

प्रसंग :-

प्रस्तुत श्लोक में सिंह, राजा दिलीप को कर्तव्य-अकर्तव्य विचार में मूर्ख कहता है।

Roll N. -

व्याख्या :-

एकछत्र सम्पूर्ण संसार पर प्रभुत्व है, नवीन युवावस्था है और सुंदर शरीर वाले हो, मात्र इस तुच्छ वस्तु (गाय) हेतु बहुत कुछ त्यागने की इच्छा रखते हो, मुझे तुम विचारों से मूर्ख प्रतीत होते हो।

5

प्रश्नोत्तर सं- 6

(आ) श्लोक की संस्कृत व्याख्या :-

अस्मिन श्लोके सिंहः कथयति यत- भो राजन्। गवार्थं कृपा मात्रेण त्वं एवं शरीरम् अर्पासि एतत् न समुचितम्। यतः तव विनाशे अपि इयम् एकैव नन्दिनी जीवते, त्वं पुनः जीवन प्रजाः पितृवत् संकटेभ्यो रक्षिष्यसि। अतः तव आत्म शरीर अर्पणं न युज्यते:।

5

Roll N. -

प्रश्नोत्तर सं - 7

कालिदास की काव्य-शैली

महाकवि कविकुलगुरु कालिदास की कृतियों में संस्कृत काव्य शैली को अत्यन्त सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया गया है। महाकवि कालिदास नीरस एवं शुष्क विषय को सरस एवं मुग्धकारी बनाने में सिद्धहस्त है।

महाकवि कालिदास की लोकप्रियता का मुख्य कारण उनकी प्रसादपूर्ण लालित्ययुक्त और परिष्कृत काव्य शैली है। सभी काव्य वैदर्भी रीति में लिखे हैं।

अलंकारों के प्रयोग में भी कवि कालिदास का नाम अनुपम है। उपमा कालिदासस्य उक्ति से सिद्ध हो जाता है कि कवि कालिदास का सबसे प्रिय एवं उत्तम अलंकार उपमा है। कालिदास उपमा के लिए विश्वप्रसिद्ध हैं, अन्य श्लेष, अनन्वय प्रतीप, रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग गौण रूप में हुआ है।

कालिदास अपने काव्य में सूक्ष्म मर्मज्ञता का परिचय देते हैं। उपमा के सम्राट कालिदास ने रस के प्रयोग में भी पीछे नहीं रहे हैं। उन्होंने श्रृंगार रस का सुंदर परिपाक किया है।

Roll N. -

प्रश्नोत्तर सं० - 8

उ० - (अ) (iv) सर्वे

उ० - (आ) (i) वशिष्ठस्य

प्रश्नोत्तर सं- 9

(आ) अर्थो हि - - - - - - - - - - - - - - - - - - इवान्तरात्मा ॥

सन्दर्भ :—

प्रस्तुत श्लोक महाकवि कालिदास द्वारा रचित विश्वविश्रुत नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' से उद्धृत है।

प्रसंग :—

प्रस्तुत श्लोक में महर्षि कण्व शकुन्तला को पति के घर भेजकर कहते हैं :—

व्याख्या :—

कन्या तो पराया धन है, आज मैंने शकुन्तला को उसके पति के पास भेज दिया है, इससे मेरा मन -

Roll N. -

अति प्रसन्न हो गया है, जैसे धरोहर लौटाने पर सुख का अनुभव होता है वैसा ही सुख पुत्री शकुन्तला को उसके प्रतिग्रह भेजकर मुझको प्राप्त हो रहा है।

5

प्रश्नोत्तर सं० - 10

(ii) ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः।

सूक्तिकीव्याख्या :—

सन्दर्भ :—

प्रस्तुत सूक्ति महाकविकालिदास कृत नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' से उद्धृत है।

2

प्रसंग :—

प्रस्तुत सूक्ति में शार्ङ्गरव गुरु कण्व को मार्ग में आए हुए जलाशय की सूचना देकर वहीं से वापस जाने की बात करता है —

5

व्याख्या :—

शार्ङ्गरव महर्षि कण्व से कहता है - "जलाशय तक प्रिय व्यक्ति के साथ जाना चाहिए।" ऐसा सुना जाता है स्मृतियों में कहा गया है, जब कोई व्यक्ति जाने लगे तो उसे जलाशय तक

Roll N. -

या किसी दुधारु वृक्ष तक पहुँचाएँ।

प्रश्नोत्तर सं० – 11

(कालिदास का जीवन परिचय)

संस्कृत साहित्य के कविकुलगुरु कालिदास के विषय में विद्वानों में विभिन्न मतभेद है। इनके जन्मस्थान समय एवं जीवन के विषय में बहुत कम जानकारी प्राप्त हुई है। महाकवि स्वयं भी अपने विषय में कुछ नहीं लिखे हैं।

समय:– अनेक विद्वानों के तर्कों के आधार पर इनके काल निर्धारण का प्रयास किया गया है। इनका समय दूसरी शताब्दी ई०पू० तथा छठी शताब्दी के मध्य माना जाता है। दूसरी ओर छठी शताब्दी के अन्त में हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट ने कालिदास की कविता की प्रशंसा की है। इस प्रकार कालिदास का समय दूसरी शताब्दी ई०पू० तथा छठी शताब्दी के मध्य में होना निश्चित है।

Gyansindhu Coaching Classes

Roll N. -

स्थान :—

कोई इन्हे बंगाल का तो कोई इन्हे कश्मीरी कहता है। वहीं कुछ विद्वान इन्हे उज्जयिनी का निवासी भी मानते हैं।

मृत्यु :—

इनकी मृत्यु इनके मित्र कुमारदास, जो सिंहलदेश के निवासी थे, की दरबारी वेश्या के द्वारा 50 अवस्था में हुई मानी जाती है।

प्रश्नोत्तर सं०- 12

उ० — (अ) (i) कालिदास

उ० — (आ) (ii) दुर्वासा

P.T.O. क०पृ०प०

Roll N. -

प्रश्नोत्तर सं० - 13

संस्कृत निबन्ध :- (i) प्रयागवर्णनम्

(1) ब्रह्मणः प्रकृष्टयागकरणात अस्य नाम प्रयागः भवति।
(2) अस्माकं भारतं तीर्थानां भूमिः वर्तते।
(3) अनेके ऋषयः मुनयः, धर्मप्रचारकाः प्रवर्तकाः च अभवन।
(4) अत्र अनेकानि तीर्थानि सन्ति यथा- केदारनाथे बदरीनाथ, जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम्, हरिद्वार, काशी, मथुरा प्रभृतीनि।
(5) प्रयागः गङ्गायमुनयोः सङ्गमे स्थितः अस्ति।
(6) प्रयागस्य अपरं नाम 'इलाहाबाद' इत्यपि वर्तते।
(7) प्रयागे उत्तरप्रदेशस्य उच्चन्यायालयोऽपि स्थितः अस्ति।
(8) भारतीयस्वातन्त्र्यसंग्रामस्य नगरं इदं प्रमुखं केन्द्रं आसीत्।
(9) नेहरू परिवारस्य 'आनन्दभवनं' नामकं प्रख्यातं भवनं अत्रैव वर्तते।
(10) अत्र पवित्रे संगमे स्नात्वा महात्मानो विदुषां च आत्मनः पावयन्ति।

10

Roll N. -

प्रश्नोत्तर सं.- 14

(उपमा अलंकार)

परिभाषा :—

जहाँ दो वस्तुओं के बीच समानता का भाव हो, अर्थात जहाँ उपमेय एवं उपमान में समानता का वर्णन हो, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

जैसे — 'दिनक्षपा मध्य गतेव संध्या।' 3

प्रश्नोत्तर सं- 15

उ० -(i) कृष्णं उभयतः गोपाः सन्ति। 2

उ० -(ii) कृष्णं परितः गोपाः सन्ति। 2

उ० - (iv) क्रोशं कुटिला नदी। 2

उ० - (v) विष्णवे नमः। 2

Roll N. -

प्रश्नोत्तर सं० - 16

उ० —(अ)

(ii) चौराद् विभेति ।

'भीत्रार्थानांभयहेतो' सूत्र के माध्यम से 'भी' तथा 'त्रैः' धातुओं के योग में पंचमी विभक्ति होती है। अतः 'चौराद्' शब्द में पंचमी विभक्ति है।

उ० —(आ)

(i) चतुर्थी

प्रश्नोत्तर सं० - 17

उ० —(अ)

(iii) रामकृष्णौ — रामश्च कृष्णश्च - द्वंद्व समास

उ० - (आ)

(iii) अव्ययीभाव

Roll N. –

प्रश्नोत्तर सं० – 18

उ० –(अ) सज्जनः का सन्धि विधायक सूत्र –
'स्तोः श्चुनाश्चुः' है। 2

उ० – (आ) (i) सत् + चित् 1

प्रश्नोत्तर सं० – 19

उ० – (अ) 'वारिणा' = विभक्ति – तृतीया वि०
वचन – एकवचन 2

उ० – (आ) (iii) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन। 1

P.T.O.

Roll N. —

प्रश्नोत्तर सं० - 20

उ० —(अ) नयामि
पुरुष — उत्तम पुरुष
वचन — एकवचन । 2

उ० - (आ) (iii) ददानि । 1

प्रश्नोत्तर सं० - 21

उ० - (अ) (ii) पा + क्त्वा 1

उ० - (आ) (ii) भवितुम् 1

Roll - N.

प्रश्नोत्तर सं० – 22

उ० – (i) रमया पत्रं लिख्यते ।

अनुक्रमाँक — 2151432

उत्तर–पुस्तिका पर अंकित निर्देश

(1) उत्तर पुस्तिका के आवरण पृष्ठ पर जिसे परीक्षार्थी प्रयोग कर रहा है, उस पर अपना अनुक्रमांक ,विषय , प्रश्न–पत्र एवं संकेतांक आदि विवरण स्वयं की हस्तलिपि में लिखना अनिवार्य है। यह कार्य प्रतिदिन परीक्षा के समय सर्वप्रथम करना चाहिए परंतु आवरण पृष्ठ अथवा उत्तर पुस्तिका के भीतर किसी स्थान पर परीक्षार्थी द्वारा अपना नाम किसी भी अवस्था में नहीं लिखना है।

(2) आवरण पृष्ठ की प्रविष्टियां भरने के अतिरिक्त परीक्षार्थी को अपनी उत्तर पुस्तिका में प्रश्न पत्र वितरण के पहले कुछ भी नहीं लिखना चाहिए।

(3) परीक्षार्थियों को चाहिए कि वह प्रत्येक पंक्ति पर लिखें और अनावश्यक कागज नष्ट न करें।

(4) परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे उत्तर पुस्तिका के पन्नों के दोनों और लिखें रफकार्य आवश्यक प्रलेख अथवा गुणन प्रक्रियाएं कवर पृष्ठ के पीछे अथवा किसी अन्य बाएं पृष्ठ पर की जा सकती हैं, जिस पर रफकार्य लिखकर काट दिया जाए। अन्य किसी प्रकार की कोई अवैध सामग्री लाने व उसके प्रयोग करने की अनुमति नहीं है।

(5) उत्तर पुस्तिका से कोई भी पन्ना नहीं फ़ाड़ना चाहिए।

(6) पहली उत्तर पुस्तिका भर जाने के बाद ही दूसरी उत्तर पुस्तिका की मांग की जाए।

(7) प्रश्नों के अनुसार ही उत्तरों की संख्या भी दी जाए यदि एक प्रश्न का उत्तर (संपूर्ण खण्डों सहित) यदि हो समाप्त हो जाए तो नवीन प्रश्न का उत्तर अगले पृष्ठ से आरंभ करना चाहिए।

(8) परीक्षार्थियों को चाहिए कि प्रतिदिन परीक्षा भवन में प्रश्न पत्र बंटने के पूर्व ही वह अपने डेस्क तथा अपनी तलाशी स्वयं ले लें। परीक्षा अवधि में जो परीक्षार्थी नकल करते अथवा बात करते पकड़े जाएंगे या परीक्षा भवन में कागज अथवा पुस्तक अपने साथ लाएंगे उनके विरुद्ध नियम के अंतर्गत आवश्यक कार्यवाही की जाएगी तथा परिषद के निर्णय अनुसार उनको दंड दिया जाएगा, चाहे उस कागज अथवा पुस्तक का परीक्षा विषय से संबंध हो अथवा नहीं।

(9) परीक्षा कक्ष में प्रवेश पत्र व रजिस्ट्रेशन कार्ड के अतिरिक्त किसी प्रकार का कोई भी कागज लाने की अनुमति नहीं है।

(10) परीक्षार्थी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नकल करने हेतु अथवा अंक प्राप्त करने के लिए कक्ष निरीक्षक या परीक्षक के ऊपर किसी प्रकार का कोई भी दवाव डालने प्रयत्न करेगा तो उसके विरुद्ध भी नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही की जाएगी तथा परिषद के निर्णय अनुसार उसके दंड दिया जाएगा।

(11) परीक्षार्थी द्वारा उत्तर पुस्तिका के अंतिम लिखित पृष्ठ के नीचे अपना अनुक्रमांक अंकों में तथा शब्दों में अवश्य लिखना है।

(12) परीक्षार्थियों को चाहिए कि वह अपने उत्तर पुस्तिका में प्रश्नों के हल के अतिरिक्त अन्य कुछ भी न लिखे, अन्यथा की स्थिति में अनुशासनहीनता मानते हुए उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी।